BA-I Date 17/8/20 Page-1

Paper-2

Unit-7

Dr. Raj Gopal
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar Madhubani
Mail ID :- rajgopal7755@gmail.com

Berkeley : Refutation of Matter

(बर्कले : जड़वाद का खंडन)

बर्कले एक अनुभववादी दार्शनिक हैं। ये अपने दर्शन में लॉक के अमूर्त प्रत्ययों, जड़वाद, मूल गुण और उपगुण में भेद आदि का खंडन कर अध्यात्मवाद सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। किसी भी सामान्य या जाति के विचार को, जो उस संपूर्ण जाति का सार हो, अमूर्त प्रत्यय कहलाता है। जैसे मनुष्यत्व, गोत्व आदि 'अमूर्त प्रत्यय' हैं। मनुष्यत्व से राम, श्याम, मोहन आदि मनुष्यों में निहित मनुष्य का सामान्य विचार है। लॉक अमूर्त प्रत्ययों की सत्ता को स्वीकार करते हैं। इसी के आधार पर वे जड़वाद सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। बर्कले अमूर्त प्रत्ययों की सत्ता का खंडन कर अध्यात्मवाद का प्रतिपादन किया है। जहाँ लॉक चित, अचित (जड़) और ईश्वर तीनों की सत्ता को स्वीकार करते हैं। वहीं बर्कले जड़ तत्व का निराकरण कर आत्मा और ईश्वर की ही सत्ता को स्वीकार करते हैं।

अनुभववादी लॉक ने ज्ञान संबंधी बुद्धिवादी मान्यताओं का पूर्णतः निषेध किया। बुद्धिवादी दार्शनिकों का मानना है कि वास्तविक ज्ञान अनिवार्य तथा सार्वभौम होता है। ये ज्ञान जन्म से ही हमारे मन में विद्यमान रहते हैं। इसी कारण ऐसे ज्ञान को जन्मजात या सहजात कहा गया है। देकार्त ने कहा है आत्मा का ज्ञान सहजात है। मैं विचार करता हूँ इसलिए मेरा अस्तित्व है। बुद्धिवाद का चरम उत्कर्ष लाइबनितज के दर्शन में है। लाइबनितज के अनुसार चिदणु में समस्त ज्ञान की संभावना निहित है। लॉक सहजात प्रत्ययों का

Scanned with CamScanner

संकेत किया है। लॉक का कहना है कि हमारा मन जन्म के समय सफेद कागज, कोरा पटि के समान है। अनुभव के द्वारा ही हमारे ज्ञान का भंडार भरता है। संवेदन और स्वसंवेदन ज्ञान के मूल स्रोत हैं। इस प्रकार से लॉक बाह्य वस्तु की सत्ता को स्वीकार करता है। बर्कले के अनुसार बाह्य पदार्थ या जड़ पदार्थ का कोई अस्तित्व नहीं है। किसी वस्तु की सत्ता उस वस्तु के ज्ञान पर आधारित है। ज्ञान वस्तु के गुणों का होता है वस्तु का नहीं। इस प्रकार बाह्य वस्तु का प्रत्यक्ष नहीं होता है। अप्रत्यक्ष वस्तु की सत्ता स्वीकार्य नहीं है। इसी कारण बर्कले ने एक मुख्य सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है - दृश्यते इति वर्तते अर्थात जो दिखता है उसी की सत्ता है। बाह्य वस्तु प्रत्यक्ष नहीं होता है अतः उसकी सत्ता नहीं है।

बर्कले के अनुसार जड़ तत्वों के अस्तित्व में विश्वास का प्रमुख आधार अमूर्त प्रत्ययों का सिद्धान्त है। बर्कले लॉक द्वारा प्रतिपादित अमूर्त प्रत्ययों के सिद्धान्त का खंडन करता है। बर्कले का मानना है कि हमारा मन विशिष्ट प्रत्ययों की ही रचना कर सकता है। हमारे मन के द्वारा अमूर्त प्रत्ययों की रचना नहीं की जा सकती है। हम सामान्य सत गुणों से रहित तत्व की कल्पना नहीं कर सकते हैं। ऐसा सत जो गुणों से रहित हो वह शून्य होगा। ऐसा सामान्य सत (द्रव्य) भ्रान्त, निरर्थक, अचिन्त्य एवं शून्य होगा। इस प्रकार से सभी सामान्य सत्यों की सिद्धि किसी न किसी विशेष प्रत्ययों के आधार पर होती है। जैसे त्रिभुज के तीनों कोणों का योग दो समकोण के बराबर होता है, यह एक सार्वभौम सिद्धान्त है किन्तु इसकी प्रमाणिकता किसी विशेष त्रिभुज के सापेक्ष में ही होता है। इससे प्रमाणित है कि अमूर्त प्रत्यय काल्पनिक है। अमूर्त प्रत्यय नाम के अतिरिक्त कुछ नहीं है। वास्तविक सत्य केवल मूर्त प्रत्यय ही है अमूर्त नहीं। सामान्यों का अस्तित्व न प्रकृति में है और न मन में है। इसका अस्तित्व केवल नाम के रूप में है। यह मत नामवाद

के अपोहवाद के समान है। बौद्धों के अनुसार केवल स्वलक्षणों (विशेषों) की ही सत्ता है। सामान्य लक्षण असत् एवं काल्पनिक है। सामान्यों की सत्ता नाममात्र है। इस प्रकार बौद्ध दार्शनिक भी पाश्चात्य नामवादियों के समान सामान्यों को वस्तुगत नहीं मानते हैं।

भाषिक दोष से अमूर्त प्रत्ययों की भ्रान्ति उत्पन्न होती है। बर्कले के अनुसार अमूर्त प्रत्ययों का विचार सामान्य या जातिगत विचार पर आधारित है। हमें उपलब्धि व्यक्ति की होती है परन्तु उसके साथ भ्रम में हम सामान्य की कल्पना करते हैं। यह कल्पना अमूर्त प्रत्ययों के आधार पर करते हैं। प्रत्यक्ष केवल विशेषों का होता है इसके सामान्यों का नहीं। इस विवाद का मूल कारण भाषा का दुरुपयोग है। अमूर्त प्रत्यय निरर्थक वाक्य है। यह वस्तुओं से भिन्न है। बर्कले सामान्य प्रत्यय को पूरी तरह अस्वीकार नहीं करते हैं। उनका कहना है कि किसी शब्द का कोई नपा तुला निश्चित अर्थ नहीं होता है। इसका तात्पर्य यह है कि शब्दों के द्वारा निर्दिष्ट प्रत्यय एक ओर तो विशेष होते हैं तो दूसरी ओर परस्पर समानता रखने वाले अनेक विषयों का ज्ञान हो जाता है। इसी कारण प्रत्ययों को सामान्य कहा जाता है। समकालीन दर्शन में विट्गेन्स्टाइन ने भाषिक प्रयोगों पर विशेष बल दिया है। उनके अनुसार भिन्न भिन्न सन्दर्भों में शब्दों का अर्थ भिन्न भिन्न होता है। शब्दों का कोई निश्चित अर्थ नहीं होता है। बर्कले अनुसार अमूर्त प्रत्ययों के भ्रान्ति का कारण भाषा है।

बर्कले अमूर्त प्रत्ययों का खंडन करता है परन्तु वह सामान्यों का खंडन नहीं करता है। इसके लिए वह प्रत्यक्ष एवं अन्तर्बोध में अंतर स्पष्ट करता है। बर्कले का प्रत्यक्ष आनुभविक है इसके विपरीत अन्तर्बोध आनुभविक नहीं है। इससे आत्मा एवं सामान्यों का बोध होता है। ये समस्त ज्ञान को प्रत्ययात्मक नहीं मानते

Scanned with CamScanner

है। प्रत्ययों का संबंध विशेषों के ज्ञान से है परन्तु अन्तर्बोध का संबंध सामान्यों के ज्ञान, प्रत्ययों के पारस्परिक संबंधों एवं आत्म ज्ञान से है। अन्तर्बोध से प्राप्त ज्ञान प्रत्ययों से प्राप्त ज्ञान से परे एवं उच्चतरीय कोटि का है। बर्कले का अन्तर्बोध लॉक के स्वसंवेदन से भिन्न है। जहाँ लॉक का स्वसंवेदन अनुभवन्य प्रत्यक्ष है। वहीं बर्कले का अन्तर्बोध अनुभव निरपेक्ष है। यह अपरोक्ष ज्ञान का आधार है। इस प्रकार से बर्कले द्वारा प्रतिपादित अन्तर्बोध का सिद्धान्त विषयवाद एवं अध्यात्मवाद सिद्धान्त का आधार है। इसी के आधार पर वह सामान्यों के ज्ञान का खंडन करता है।

Scanned with CamScanner